ISSN : 0972-2351

सी एम एफ आर आइ विशेष प्रकाशन, संख्या 73

मत्स्यगंधा

2001

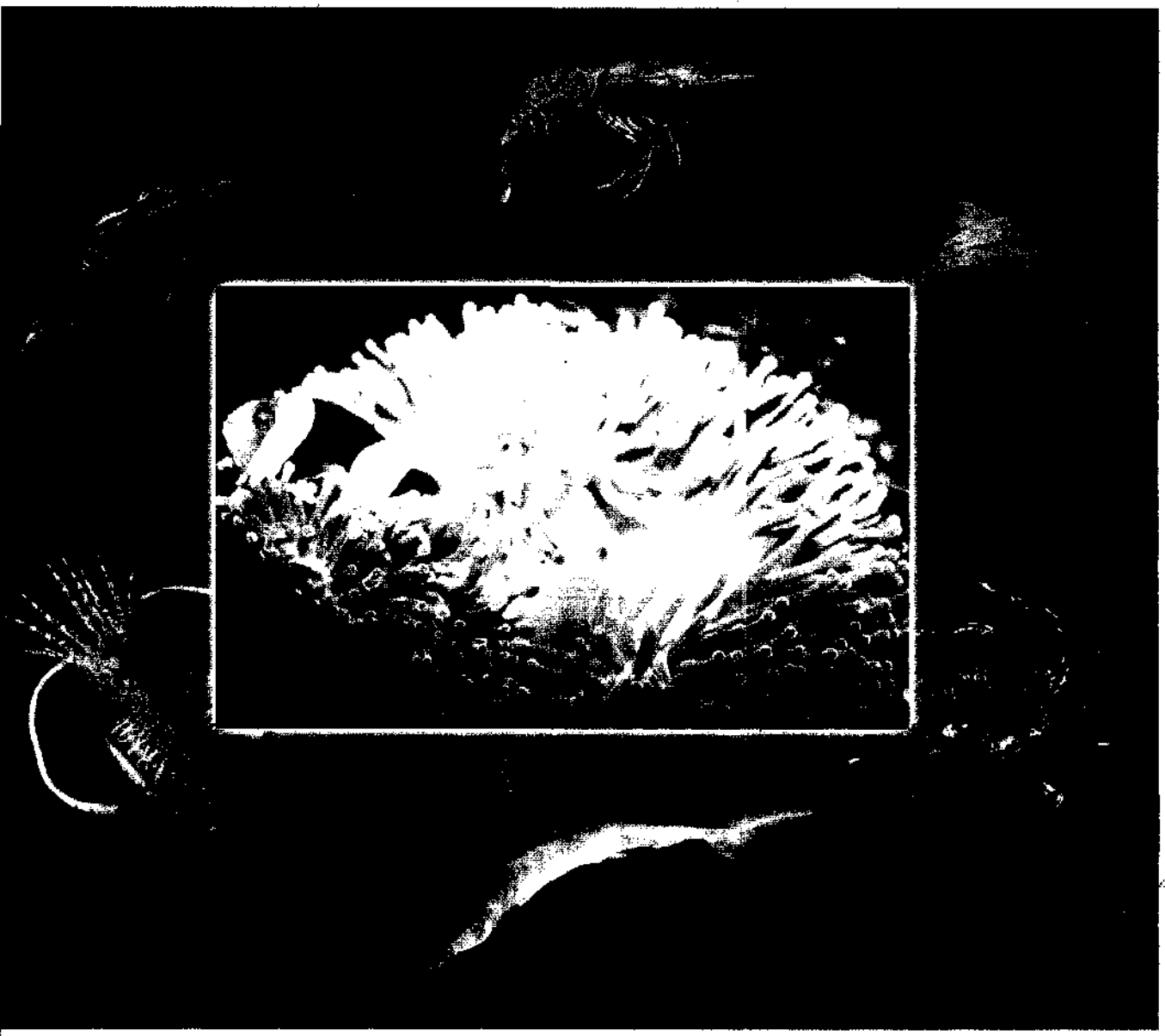

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
डाक संख्या 1603, टाटापुरम डाक, कोचीन 682 014, भारत
सितंबर 2002

मिनिकॉय की जीवनशैली के कुछ पहलू

ए.के.वी. नासर एवं **चंद्रकांत तायडे**
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का विशाखपट्टनम क्षेत्रीय केंद्र, आध्रा प्रदेश

मिनिकॉय की सामाजिक जीवनशैली का आपको सबसे महत्वपूर्ण पहलू दिखाई देगा वह है कडा अनुशासन तथा परिवारों के बीच आपसी आत्मीयता। मिनिकॉय के दस गाँवों के पुरुष, महिला तथा बच्चों के मुखिया तथा उपमुखिया का चुनाव अलग रूप से होता है। मुखिया के शब्द को यहाँ के लोग बहुत मानते हैं और उसके निर्णय का गाँव के सभी लोग आदर करते है। इसके बदले में सारे गाँव के परिवारों की देखभाल तथा रोजमर्रे की परेशानियों को मुखिया देखता है। गाँव की सभी परेशानियों को मुखिया जानता है। यहाँ के सारे लोग (सामान्यतः पुरुष) मछुआरे हैं। और इस कारण वह ज्यादातर समय घर से दूर रहते हैं। इन मछुआरों के घर की सभी जिम्मेदारियाँ मुखिया पर होती हैं।

यहाँ के शादी के रस्मोरिवाज भी बडे अलग हैं। पूरे गाँव के लोग शादी की तैयारी में जुट जाते हैं। घर के सभी काम बडे शिष्टबद्ध तरीके से होता है। सामान्य तौर पर बुजुर्ग लोग ही सूचनायें देते हैं तथा वयस्क और बच्चे उसका कडाई से पालन करते हैं। गाँव की सभी तरुण लडकियाँ दुलहन जैसे कपडे पहनकर पत्थर पर मसाला पीसने की रस्म निभाती हैं। मसाला पीसने वाला पत्थर यह लडकियाँ अपने अपने घर से लाती हैं। इसके अलावा जहाज से प्रवासियों को लाना और पेड काटना जैसे काम सभी गाँव के लोग मिलकर करते हैं। इस तरह की तैयारियों के बीच बहुत कम मौज मजा होती है।

मिनिकॉय के ज्यादातर लोग इस्लाम धर्म के हैं इस वजह से आम तौर पर माँ के नाम का घर सबसे बडी बेटी के नाम पर हो जाता है। सभी लडकियाँ एक ही घर में रहती हैं और लडके सिर्फ नाममात्र के लिए घर के सदस्य होते हैं।

दुलहे के रिश्तेदार तथा दोस्त उसके घर आते हुए

लडकी अपने सुसराल कभी कभी जाती है। सामान्यतः पति सायंकाल के समय आकर रात भर रह जाता है। तथा दूसरे दिन निकल जाता है। दोपहर से पत्नी कुछ मसाला मछली की सब्जी बनाती है और उसे अपने साथ पति के घर के लिए ले जाती है। पति के घर आकर वह कुछ घंटे अपनी सास, ननद और बाकी लोगों के साथ रह कर अपने घर वापिस आ जाती है। मिनीकॉय की जीवन शैली का और एक विचित्र पहलू है कि बुजुर्गों के प्रति अनादर। बुजुर्ग चाहे वह स्त्री हो या पुरुष उसे घर की रोजमर्रा की चीजों में हाथ बंटाना ही पडता है। चाहे वह कितना भी बूढा हो, आराम करने की सहुलियत किसी को नहीं है। सामान्यतः यहाँ पर बुजुर्ग लोग अपने नाती पोतों को स्कूल पहुंचाते हैं तथा दुकान से मछली तथा आवश्यक चीजें लाते हैं। मृत्यु जीवन का एक अभिन्न सत्य है और उस सत्य को यहाँ के लोग दृढतापूर्वक लेते हैं। यहाँ ज्यादातर मुस्लिम धर्म के लोग हैं इसलिए मौत के बाद मुर्दे को दफनाया जाता है और उस विधि को मौत के एकाद घंटे में ही पूरा कर लिया जाता है।

मौत अगर रात को हो जाती है तो रात के ही रात मुर्दे को दफनाया जाता है। ज्यादा देर तक यहाँ के लोग मौत का दुख नहीं मनाते हैं और कभी कभी आपको पता तक नहीं चलेगा कि इस घर के किसी व्यक्ति की मृत्यु हो गई। ज्यादातर मिनिकॉय के लोग बहुत कम खाना खाते हैं तथा खाने के अलावा मिठाई तथा नमकीन को बडे चाव से खाया जाता है। मछली यहाँ के लोगों के खाने का एक अभिन्न अंग है और किसी न किसी प्रकार से रोज के खाने में मछली का होना अनिवार्य है।

काली चाय (बिना दूध के) सारा दिन लोग पीते हैं। इसके अलावा तंबाकू के बिना सादा पान खाने के भी यहाँ के लोग शौकीन है। इस प्रकार का शौक सिर्फ बुजुर्गों में ही है ऐसा नहीं है। यहाँ के बच्चे भी उबली हुई सुपारी का सेवन करते हैं। धूम्रपान का शौक वयस्क तथा बुजुर्गों में है लेकिन साफ सफाई के मामले में यहाँ के लोग काफी सजग है।

खाना खाने के लिए इन लोगों को बहुत कम समय लगता है। घर में जो भी बना है, तुरंत सभी लोग आपस में बांट के खा लेते हैं।

सामान्यतः ईद यहाँ का सबसे बडा त्यौहार है। ईद के दिन पूरे गाँव के लिए एक ही खाना दो मस्जिदों में बनाया जाता है। सभी गाँव के लोग मिलके ईद की पहली रात को सारा खाना बना लेते हैं तथा ईद के दिन चार-चार लोगों का एक समूह बनाकर खाना खाया जाता है। खाने के मामले में यहाँ पर ज्यादातर सभ्यता का पालन नहीं किया जाता और जिसको जो पसंद है और जैसा चाहे उस प्रकार खाना खाने की सभी को सहूलियत है।

अगर आपको किसी के यहाँ का शादी में खाना खाने का न्योता है तो आपके लिए वहाँ कोई इंतजार करता हुआ नहीं दिखाई देगा आपको आने के बाद अपने आप खाना खाके वापस जाना होता है।

नवजात शिशु के पैदा होते ही उसी दिन उसका नाम रखा जाता है और नाम सामान्यतः सप्ताह के दिनों के आधार पर रखा जाता है। इस प्रकार से लडकों के नाम सात प्रकार के हैं, मोहम्मद, हसन, हुसैन, इस्माईल, इब्राहिम, अलि, एवं मुस्त। यहाँ 2 से 3 साल के बच्चे अपने लकडी के खिलौनों के साथ बडे बच्चों के बराबर तैरने पानी में उतर जाते हैं। इस प्रकार का दृश्य यहाँ पर बहुत सामान्य तौर पर दिखाई पडता है यहाँ पर फैले विशाल समुद्र के साथ यहाँ के लोग बहुत आसानी से घुलमिल गये हैं। यहाँ पर बच्चे अपना काफी समय मछली पकडने तथा समुद्र में तैरने में गुजार देते हैं और इस वजह से यहाँ के बच्चे पढाई में ज्यादा रुचि न होने से शिक्षा के क्षेत्र में पिछडे हैं। यहाँ ज्यादातर बच्चे स्कूल छोड चुके हैं।

गणतंत्र दिवस तथा स्वतंत्रता दिवस पूरे मिनिकॉय में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यहाँ का माहोल पूरे भारत में भी नहीं दिखाई देगा। इन महोत्सवों की तैयारी उप जिलाधिकारी के नेतृत्व में एक महीना पहले से शुरु हो जाती है। झंडा फहराने के बाद यहाँ पर सारी प्रतियोगिताएँ शुरू हो जाती हैं। उसमें रस्सी खींच, तैराकी तथा बोट प्रतियोगिताएँ शामिल हैं। उस दिन शाम को फुटबॉल प्रतियोगिता का फाइनल मैच होता है। इस मैच को देखने के लिए पूरे उल्लास से लोग हिस्सा लेते हैं। उसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम का दोर रात तक चलता है दो तीन दिनों तक ये कार्यक्रम चलते रहते हैं।

यहाँ मिनिकाय के लोग बहुत चिंतामुक्त जीवन व्यतीत करते हैं। पैसा बचाने की चाह इन लोगों में नहीं है। बहुत संख्या के पुरुष विदेशी पोतों में काम करने वाले हैं। इन नाविक कर्मियों को लोग दुलार से सीमेन पुकारते हैं। ये सीमेन जो अपने साथ लाखों रुपये लाते हैं उनके अपने जहाज पर सैर ले जाने के लिए लोगों से पैसा लेते हैं। यहाँ के लोगों के पैसों का मुख्य स्रोत नाविक कर्मी बनने से आने वाला पैसा है, इसके अलावा यहाँ के लोग टूना मछली और नारियल को बेचने में खूब मुनाफा कमाते हैं। मास्मिन नामक सूखी टूना मछली अपने स्वाद तथा स्वास्थ्य के लिए

बहुत प्रसिद्ध है। ज्यादातर काम में महिलाओं का योगदान पुरुष वर्ग से ज्यादा है। बचाये हुए रुपयों को मिनिकॉय के लोग अच्छी पिकनिक, मिनिकॉय के दक्षिण भाग में मनाने में खर्च कर देते हैं या कोचीन चले जाते है। मिनिकॉय के बहुत सारे लोगों ने अपने लिए कोचीन में जायदाद ले रखी है और अच्छा खासा समय ये लोग कोचीन में बिताते हैं।

नवजात शिशु का जन्म तथा बीमारियों के इलाज के लिए भी लोग कोचीन जाना ज्यादा पसंद करते हैं। यह भी यहाँ के बहुत सारे लोगों की छुट्टी मनाने का एक तरीका है। यहाँ के लोग मलयालम फिल्मों से ज्यादा हिंदी फिल्मे पसंद करते हैं तथा कैसेट्स वैगरह मुंबई से खरीदे जाते हैं। लडके तथा लड़कियाँ नृत्य सीखने में बहुत उत्सुक है तथा सीखने के बाद प्रजातंत्र दिवस या स्वातंत्रता दिवस के दौरान कार्यक्रम में हिस्सा लेते हैं। मिनिकॉय के लोग अपनी अलग पहचान बनाये रखने में विश्वास रखते हैं। यहाँ के लोग खुद द्वीपवासी (islander) होकर भी दूसरे द्वीप (island) के लोगों को islanders कहकर संबोधित करते है। वैसे तो ये लोग बाकी लोगों से घुलमिल जाते हैं किंतु आपस में थोड़ी दूरियाँ रह ही जाती है। मिनिकॉय में दूसरी जाति के लोग जैसे यूरोपियन तथा आफ्रिका के लोग भी दिखाई पडते हैं। जो लोग सीमेन है वे लोग स्पैनिश, रूसी, फ्रेंच भाषाएँ बोलना जानते हैं।

मत्स्यापालन के संबंध में भी मिनिकॉय के लोगों का अनुशासन दिखाई पडता है। यहाँ जब भी कोई परेशानी का सामना होता है तो तुरंत एक मिटिंग बुलाई जाती है और जो भी निर्णय होता है उसको सब लोग मानते हैं। मानसुन मौसम के खत्म होते ही सभी लोग लैगूण (Lagoon) की साफ सफाई तथा दिशा दिखाने वाले यंत्रों की मरम्मत करने में जुट जाते हैं।

यहाँ के लोग नई विचारधारा को मानने वाले हैं तथा कानून के प्रति जागरूक हैं। अफसरों के प्रति बहुत अच्छा बर्ताव रखते हैं और कडी मेहनत और अनुशासन इन लोगों की पहचान है। •

भारत की उपास्थिमीन मात्स्यिकी - एक मूल्यांकन

सी एम एफ आर आइ विशेष प्रकाशन सं. 71, फरवरी, 2002. आइ एस एस एन : 0972-2351

एस.जी.राजे, ग्रेस मात्यू, के.के. जोशी, रेखा जे. नायर, जी. मोहनराज, एम. श्रीनाथ, एस. गोमती और एन. रुद्रमूर्ति।

विदोहित समुद्री जीव संपदाओं के अनुसंधान का एक नोडल संस्थान होते हुए सी एम एफ आर आइ ने उपास्थिमीनों के विभिन्न पहलुओं पर सम्मिलित अनुसंधान की आवश्यकता समझकर इन सबके प्राथमिक आंकडे इकट्ठे किए है जो सरकार तथा अन्य इच्छुक ग्रुपों के लिए सहायक हो जाएंगे । ग्रंथसूची भाग में भारत के चारों ओर के समुद्र की उपास्थिमीन मात्स्यिकी के वर्गीकरण विज्ञान, जीवविज्ञान, वितरण आदि का विवरण दिया गया है ।

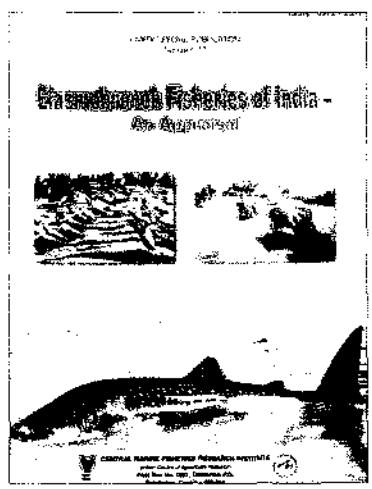

यह पुस्तक 1/4 क्राउन आकार बहुरंगों कागज़, 76 पृष्ठों, IV प्लेटों की है जिसका मूल्य 70/- रुपए है।